सर्पदंश में तुरन्त अस्पताल नहीं ले जा सकते तो ये प्राथमिक उपचार दें-

- सबसे पहले पीडित व्यक्ति को यह भरोसा दिलायें कि 80-90 प्रतिशत सांप जहरीले नहीं होते है।
- शरीर के प्रभावित हिस्से से अंगूठियाँ, घड़ी, जूते व तंग कपड़े, आभूषण इत्यादि को हटा दें, ताकि प्रभावित हिस्से में रक्त का संचरण न रुके।
- सर्पदंश प्रभावित अंग को स्थिर कर दें एवं इसे हिलने-डुलने से बचायें।
- पीडित व्यक्ति को जितनी जल्दी हो सके निकटतम स्वास्थ्य केन्द्र ले जायें।
- सांप के रंग और आकार को देखने एवं याद रखने की कोशिश करें।
- घाव को साफ पानी और साबुन से साफ करें।

सर्पदंश के प्राथमिक उपचार

- सबसे पहले सर्पदंश से पीड़ित व्यक्ति को किसी प्रकार की शारीरिक क्रिया न करने दें।
- सबसे पहले जिस व्यक्ति को साँप ने काटा है, उसकी घबराहट दूर करें क्योंकि जितनी घबराहट होंगी, उतनी तेजी से जहर फैलता जायेगा।
- घांव को साबुन से धोंऐ।
- मरीज के घांव से किसी प्रकार की छेड़छाड़ न करें।
- सर्पदंश का उपचार अनिवार्य रुप से किसी मान्यता प्राप्त पदवी धारक चिकित्सक के परामर्श से करना चाहिए।
- पीड़ित व्यक्ति को चिकित्सालय जाने के उपरान्त जल्द ही ऐंटीवेनम दिया जाना चाहिए।
- प्राथमिक उपचार सर्पदंश पीड़ित को डॉक्टर तक पहुँचने और विषरोधक उपचार शुरू होने तक जान बचाने में अहम भूमिका निभाता है।
-

<u>सर्पदंश के बाद निम्नलिखित सुझाव अनुपालन की सिफारिश की जाती है।</u>

1. धीरे से सर्पदंश से पीड़ित को सर्प से दूर ले जाये।
2. हर एक सर्प विषैला नही होता यह तथ्य पिड़ित को समझाते हुए उसका ढाढस बंधाये और उसे शांत करने की कोशिश करें।
3. पीड़ित को तेज चलना या दौड़ना पूर्णतः वर्जित है।
4. सर्पदंश के जगह सूजन की संभावना रहती है इसलिए अंगूठी, घड़ी, ब्रेसलेट या कसे कपडे जितना जल्दी हो सके निकाल देना चाहिए।

<u>किसी दो पहिया द्वारा पीड़ित को अस्पताल ले जाने का सही तरीका -</u>

- दुपहिया द्वारा पीड़ित को अस्पताल ले जाते समय दो लोगों के मध्य में बिठाना चाहिए।
- पीड़ित न गिरे इसलिए पीछे बैठे आदमी द्वारा उसे भलीभाँती कसकर पकड के रखना चाहिए।
- पीड़ित के पैर दुपहिया के फूटरेस्ट पर रखने चाहिए।

<u>अति महत्वपूर्ण -</u>

सर्पदंश के बाद निम्नलिखित गतिविधियाँ <u>नहीं</u> करनी चाहिए।

- सर्प को ढूंढना, पकड़ना या मारना नहीं चाहिए।
- सर्पदंश की जगह ब्लेड, चाकू या किसी तीक्ष्ण धारदार हथियार से चीरा नहीं लगाना चाहिए।
- मुँह द्वारा विष की चूसकर नहीं निकालना चाहिए।
- सपेरे, तांत्रिक या अनाधिकृत औषधी देने में समय बर्बाद नहीं करना चाहिए।
- पीड़ित को डाक्टर के पास तुरंत ले जाना चाहिए। सर्पदंश के लक्षण दिखने का इंतजार नहीं करना चाहिए।
- सर्पदंश की जगह बर्फ की सिल्ली, या गरम/ठंडा/गिला कपड़ा बांधना।
- सर्पदंश की जगह रस्सी या कपड़ा कसकर बांधना।
- डॉक्टर के परामर्श के बिना पीड़ित व्यक्ति को दवाई नहीं देना चाहिए।
- सर्पदंश के बाद पीड़ित को चलना/दौड़ना या वाहन नहीं चलाने देना चाहिए।

ले0 जनरल रविन्द्र प्रताप साही

(अतिविशिष्ट सेवा मेडल)

उपाध्यक्ष,

उ0प्र0 राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

कुशल प्रबंधन द्वारा
सर्पदंश (आपदा) न्यूनीकरण

उ0प्र0 राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

बी-2,ब्लाक भूतल, पिकप भवन, विभूति खण्ड,
गोमती नगर, लखनऊ

Email : upsdma@gmail.com

दूरभाष-0522-2306882, 2723950, 4078533 (कार्यालय) 2720285

हेल्पलाइन नम्बर - 1070
अपातकालीन एम्बुलेंस नम्बर - 108/102

उत्तर प्रदेश
राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

श्री योगी आदित्यनाथ

मा0 मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

सर्पदंश से बचाव

उ0प्र0 राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा जनहित में जारी

सर्पदंश प्रबंधन
सर्पदंश से बचने के लिये जागरुक होना जरुरी

- जब कोई सांप किसी को काट लेता है, तो सर्पदंश या सांप का काटना कहते हैं।
- सांप काटने से घाव हो सकता है और कभी-कभी विषाक्त भी हो जाती है, जिससे मृत्यु तक संभव है।
- अब यह ज्ञात है कि अधिकांश सर्प विषहीन होते हैं किंतु सांप प्रायः अपने शिकार को मारने के लिए नही काटते हैं बल्कि अपनी आत्म रक्षा के लिए काटते हैं।
- भारत में सर्पदंश से आधे से अधिक लोगों की जान विषहीन सांप के काटने से होती है।
- अगर उन्हें सर्पदंश प्रबंधन का ज्ञान होता तो मृत्युदर कम होती।

सामान्यतः सर्प के छिपने के स्थान

सर्पदंश से सबसे ज्यादा प्रभावित लोग

किसान

मजदूर

शिकारी

चरवाहें

सर्पमित्र

जनजातियाँ

शरणार्थी

अन्य

उ0प्र0 राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा जनहित में जारी

भारत के अत्याधिक जहरीले सर्प

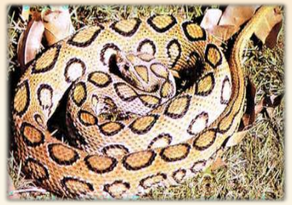

रसेल वाइपर/ कोरीवाला / घानस

- दिखने मे मोटा और चक्तेदार
- प्रेशर कुकर की सीटी की तरह आवाज करता है।
- उँची घास, गन्ने के या कपास के खेत में आश्रय लेता है।
- दंश के जगह गहरे घाव के साथ रक्तस्त्राव होता है।
- रक्तस्त्राव शरीर के किसी भी रंध्र से हो सकती है जैसे की नाक, मुँह, कान या गुदाद्वार।

कॉमन करैत/इंडियन करैत

- आमतौर पर बरसात के मौसम में पाया जाता है।
- छोटे खाई–खड्डे या बिल में छुपता है।
- स्नानघर के पाईप या दरवाजे के छोटे छेद से प्रवेश करता है।
- दंश से तीव्र पेट दर्द, उल्टी और कमजोरी जैसे लक्षण दिखते है।
- दंश से – दिखने में धुंधलापन, बोलने में या साँस लेने में कठिनाई, या लकवा जैसे लक्षण दिखने की संभावना होती है।

किंग कोबरा/(स्पेक्टेकल्ड कोबरा)/नाग

- फन पर U/V आकार का चिन्ह
- गाय, भैंस के तबेला, झाडी या लकड़ी के ढेर में आश्रय लेता है।
- दंश के तुरंत बाद दर्द होता है और उसके उपरान्त सूजन और त्वचा काली पडती है।
- दंश से – आँखों में धुंधलापन, बोलने में या साँस लेने में कठिनाई, या लकवा जैसे लक्षण दिखने की संभावना होती है।

सॉ स्केल वाईपर

- लकडी का ढेर या घास में छुपता है।
- घास से चलते समय आमतौर पर काटता है।
- दंश कांटे की चुभन जैसा महसूस होता है।
- दंश के जगह गहरे घाव के साथ रक्तस्त्राव होता है।
- रक्तस्त्राव शरीर के किसी भी रंध्र से हो सकती है जैसे की नाक, मुँह, कान या गुदाद्वार।

भारत के गैर विषैले सर्प

इंडियन रैट स्नेक | वाइन स्नेक | कॉमन
कॉमन कैट स्नेक | इंडियन रॉक स्नेक | इंडियन सैण्ड स्नेक
बफ़ड स्ट्रीप्ड स्नेक | वाल्फ स्नेक | चेकर्ड स्नेक

सर्पदंश के लक्षण/प्रभाव

सर्प दंश वाले स्थान पर तेज दर्द होना | पीड़ित व्यक्ति को बेहोशी आना, | दंश वाले हिस्से में सूजन आना | आँखों में धुँधलापन छा जाना
पलकों का भारी होना | पसीना आना | उल्टी महसूस होना | सांस लेने में तकलीफ होना
उच्च रक्तचाप | हृदय गति का रूकना | थक्का रोधी | पैरालिसिस/लकवा

भारत में सर्पदंश से अधिक मृत्य होने के कारण

प्राथमिक चिकित्सा का ज्ञान न होना

एंटीवेनम की कमी होना।

झाडफूक के चक्कर में पड़ना

अवैज्ञानिक (देशी) तरीकों का प्रयोग करना।

खराब प्रशिक्षित डॉक्टर का होना

उ0प्र0 राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा जनहित में जारी

सर्प–दंश प्रबंधन

सर्पदंश के दौरान क्या करें।
क्या न करें
तथा बचाव हेतु सुझाव

क्या करें?

- सबसे पहले पीड़ित व्यक्ति को सोने न दें एवं किसी भी प्रकार की शारीरिक क्रिया न करने दें।
- सबसे पहले जिस व्यक्ति को सांप ने काटा है उस व्यक्ति की घबराहट को दूर करें। क्योंकि उसे जितनी घबराहट होगी, उतनी तेजी से उसके शरीर में जहर फैलता जायेगा।

- घाव को साबुन एवं साफ पानी से धोएं।

- मरीज के घाव से किसी भी प्रकार की छेड़–छाड न करें।
- तुरंत एम्बुलेंस को 1070/112 पर कॉल करें।
- पीड़ित व्यक्ति को नजदीक के चिकित्सालय ले जाएं जहाँ पर डाक्टर एवं एण्टीवेनम उपलब्ध हो।

क्या न करें?

- सांप के जहर को कभी भी चूसकर निकालने की कोशिश न करें।
- अपने मन से किसी भी प्रकार की दवाई मरीज को न दें।
- पीड़ित व्यक्ति के सर्पदंश वाले भाग पर किसी भी प्रकार का मलहम न लगायें।

- सपेरे अथवा तांत्रिक के चक्कर में न पड़ें।
- सांप को अकेला छोड़ दें। कई बार सांप के ज्यादा नजदीक आने के कारण लोग सर्पदंश का शिकार बन जाते हैं। अपने हांथ व पैर को उन स्थानों से यथा सम्भव दूर रखें जहाँ पर आपकी दृष्टि न पड़ती हो। जब तक आप सांप की आक्रमण परिधि से सुरक्षित दूरी पर न हो। पत्थर व लकड़ी से मारने का प्रयास न करें।

- यदि मजबूत चमड़े के जूते न पहने हों तो ऊंची घास वाले स्थानों से दूर रहें। जहां तक सम्भव हो स्वयं को पगडण्डियों तक सीमित रखें।

उ0प्र0 राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा जनहित में जारी

सर्प–दंश से बचाव के उपाय

चलते समय गम बूट्स का प्रयोग करें

चलते समय छड़ी का प्रयोग करें

रात्रि में टॉर्च का प्रयोग करें

सोते समय खाट और बेड नेट का प्रयोग करें

घास काटने से पहले लकड़ी की साथ ले जाना

तैराकी करते समय लकड़ी की छड़ी साथ में ले जाना चाहिए

वन क्षेत्र/लम्बी घास/जंगल की ओर जाते समय लकड़ी की बड़ी छड़ी का प्रयोग करें।

- आस–पास का इलाका साफ सुथरा रखिए और कोई कबाड़ या कूड़े का ढ़ेर न पनपने दे। साथ ही साथ चूहों की आबादी न बढ़ने दे।

- समुदाय में उचित माध्यम से सर्पदंश से बचाव के लिए बचाव संबंधी जागरूकता का प्रचार प्रसार करें।

हेल्पलाइन नं0 1070 सतर्क रहें, सुरक्षित रहें, सावधान रहें